9

समावेशी आरंभिक बाल शिक्षा
आदर्श स्वप्न और व्यावहारिक संभावनाओं की पड़ताल

भारती*

आरंभिक बाल शिक्षा (आ.बा.शि.) सुनते ही मन में ऊर्जा से भरपूर, मासूम मुस्कुराते चेहरों की उपस्थिति से जीवंत कक्ष का दृश्य आ जाता है। औपचारिक शिक्षा के इस आरंभिक काल में, क्या हम भाषा अधिगम के लिए समावेशी शिक्षण व्यवहारों को अपना सकते हैं? समावेशी शिक्षण व्यवहार कुछ और नहीं बल्कि विद्यार्थियों की क्षमताओं में विविधता को स्वीकारते हुए शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में सभी की पूर्ण भागीदारी के लिए निरंतर प्रयत्नशीलता को बढ़ावा देते हैं। प्रस्तुत आलेख में आ.बा.शि. भाषा पाठ्यचर्या और संबंधित गतिविधियों में सांकेतिक भाषा और ब्रेल-पूर्व गतिविधियों के सार्थक सम्मिलन की संभावनाओं की तलाश की गई है। ब्रेल-पूर्व गतिविधियाँ, लघु माँसपेशीय कुशलताओं (fine motor skills) पर निर्भर करती हैं, जो आ.बा.शि. कार्यक्रम का भी एक अभिन्न अंग हैं। मोती पिरोना, रंग वाले ब्रश को पकड़ना, किताब के पन्ने पलटना, फीते बाँधना इत्यादि क्रियाओं के माध्यम से इनका अभ्यास कराया जाता है। इसी तरह से सांकेतिक भाषा में 'माफ़ कीजिए, धन्यवाद, कृपया, खेल, आपका स्वागत है, सहायता, कूदो, बैठो, खड़े हो जाओ, गाय, कुत्ता, बिल्ली' इत्यादि के लिए प्रयोग होने वाले मानक संकेतों को सरलता से आ.बा.शि. की गतिविधियों में समाहित किया जा सकता है क्योंकि यह भी लघु माँसपेशीय कुशलताओं को विकसित करने वाली आ.बा.शि. की गतिविधियों के साथ समरसता में है। अनुभवों एवं शोध ने यह दर्शाया है कि जीवन के शुरुआती वर्षों में एक से अधिक भाषा सीखना, बाद के वर्षों की तुलना में, सरल होता है। दृष्टिबाधिता वाले एवं श्रवणबाधिता वाले बच्चों की उपस्थिति एवं अनुपस्थिति की परवाह किये बिना, आरंभिक वर्षों में समावेशी शिक्षण व्यवहारों को आ.बा.शि. कक्षा-कक्ष में अपनाने से, विविधताओं को स्वीकारना और दूसरों की आवश्यकताओं एवं योग्यताओं के प्रति संवेदनशील होना जैसे मूल्यों को सरलता से अपनाया जा सकता है, जिससे समय आने पर समावेशी समाज की नींव डाली जा सकेगी।

आरंभिक बाल शिक्षा (आ.बा.शि.) वह है जो किसी के भी मन में, हँसते-मुस्कुराते, ऊर्जा से भरपूर मासूम चेहरों से भरे कक्ष का दृश्य पैदा कर देती है। औपचारिक शिक्षा के इस शुरुआती चरण में क्या हम

*एसोसिएट प्रोफ़ेसर, विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली 110016

© NCERT not to be republished

भाषा अधिगम के लिए समावेशी शिक्षण व्यवहारों का प्रयोग कर सकते हैं? इस सरल से विचार को दो दृष्टिकोणों से समझने की आवश्यकता है— पहला आ.बा.शि. केंद्रों में भाषा शिक्षण-अधिगम के लिए वर्तमान में प्रयुक्त शिक्षण प्रणाली और दूसरा, समावेशी शिक्षण व्यवहार।

आरंभिक बाल शिक्षा (आ.बा.शि.) वर्तमान शिक्षण व्यवहार विकास की समग्र पद्धति पर आधारित हैं (नेशनल ई.सी.सी. ई. पॉलिसी, 2013)। विषय आधारित शिक्षण व्यवहार विकास के बौद्धिक, भाषायी, हस्त कौशल, रचनात्मक, सामाजिक और संवेदनात्मक आयामों को संबोधित करते हैं (सोनी, 2015)।

समावेशी शिक्षणशास्त्रीय व्यवहार और कुछ नहीं, बल्कि शिक्षण-अधिगम के वह अच्छे अभ्यास हैं जो विद्यार्थियों की योग्यताओं में विविधताओं के बावजूद, सभी की पूर्ण भागीदारी की ओर परिलक्षित हैं। (प्रमोटिंग इंक्लूसिव शिक्षक शिक्षा, मेथडोलॉजी, यूनेस्को 2013)

उद्देश्य

- ब्रेल-पूर्व कुशलताओं और सांकेतिक भाषा शब्दकोश में से उन शब्दों की पहचान करना जिन्हें आ.बा.शि. पाठ्यचर्या में समाहित किया जा सकता है।
- आ.बा.शि. केंद्र को दृष्टिबाधित और श्रवणबाधित बच्चों के लिए समावेशी बनाने की संभावनाओं का अध्ययन करना।

ब्रेल-पूर्व गतिविधियाँ

टेक्सास स्कूल फ़ॉर द ब्लाइंड एंड विज़ुअली इम्पेयर्ड, टेक्सास और पाथ ऑफ़ लिटरेसी के अनुसार, ब्रेल-पूर्व गतिविधियाँ, उन माँसपेशीय क्रियाओं को कहते हैं जो ब्रेल सीखने के लिए अत्यधिक लघु माँसपेशीय कुशलताओं को सशक्त करती हैं। इनमें शामिल हैं—

- हथेलियों से पकड़ना (दबाना, छेद करने वाले यंत्र का प्रयोग, चिकनी मिट्टी के साँचों का प्रयोग इत्यादि)
- अँगूठे और अँगुलियों से पकड़ना (मोती पिरोना, पेंसिल/रंग ब्रश/ रंगों का प्रयोग, किताब के पन्ने पलटना, छोटी वस्तुओं जैसे कि भिन्न रंगों के पेपर क्लिप को अलग-अलग श्रेणियों में र खना इत्यादि)
- चिमटियों का प्रयोग (बबल रेप के गुब्बारों को फोड़ना, ड्रॉपर बोतल का प्रयोग, छोटे छेदों में से सिक्कों को गुजारना, कपड़ों/कागज़ के लिए उपयोग होने वाली चिमटियों का उचित प्रयोग, छेदों में धागा/फीता पिरोना)
- घुमावदार गति (बर्तन में खाना मिलाना, एक्लेयर्स/पारले जैसी टॉफ़ियों को उनके आवरण से निकालना, चुटकियों से घिरनी नचाना, बोतल का ढक्कन खोलना, तार/धागे/फीते को घुमा-घुमा कर लकड़ी/पत्थर पर लपेटना)
- पकड़कर छोड़ना (वस्तुओं को उनकी श्रेणी अनुसार भिन्न डिब्बों में रखना, कप/कैन/ब्लॉक जैसी वस्तुओं को एक के ऊपर एक कतारबद्ध करना)
- आवश्यकतानुरूप अँगुलियों का प्रयोग (खिलौना कार/मोबाइल/कंप्यूटर/मिक्सी इत्यादि के बटनों से खेलना, स्टेंसिल पर अँगुली फेरना (ट्रेसिंग), संगीत यंत्रों के साथ खेलना)
- दोनों हाथों का प्रयोग, (ऐसी गतिविधियाँ जिनमें एक हाथ से स्थिरता प्रदान की जाती है और दूसरे

© NCERT not to be republished

हाथ से इच्छित बदलाव किये जाते हैं, जैसे कि कागज़ फाड़ना, ढक्कन को घुमाकर खोलना व बंद करना, स्केल (पैमाने) का प्रयोग करके लाइन बनाना, अँगुली से रंग करना, कटोरे में मिश्रण बनाते हुए उसे मज़बूती से पकड़ कर स्थिर रखना आदि।)

- प्रत्येक अँगुली को विशिष्ट उद्देश्य के लिए उपयोग करना, जैसे कि पहली अँगुली से कागज़ को स्पर्श करते हुए घुमाना (ट्रेसिंग)
- हल्के से छूना, (ब्रेल पढ़ने और अन्य उभारे चित्रों के लिए अत्यावश्यक है।)
- उभार बोध और ब्रेल अक्षर पहचान के शुरुआती पाठ (मेनगेल्ड विकास कार्यक्रम), जैसे कि—
  - अँगुलियों को बाईं से दाईं ओर एक समान चिह्नों, जिनके बीच में जगह नही है, से ले जाना।
  - अँगुलियों को बाईं से दाईं ओर असमान चिह्नों, जिनके बीच में जगह नहीं है, से ले जाना।
  - अँगुलियों को बाईं से दाईं ओर एक समान चिह्नों, जिनके बीच में एक अथवा दो रिक्त स्थान हैं, से ले जाना।
  - अँगुलियों को बाईं से दाईं ओर, असमान चिह्नों, जिनके बीच में एक अथवा दो रिक्त स्थान हैं, से ले जाना।

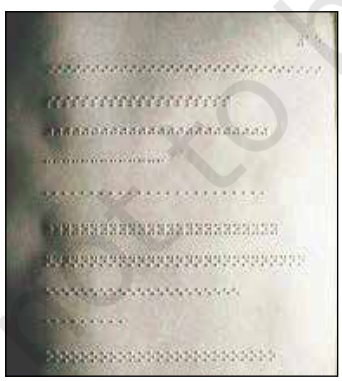

ब्रेल लिपि

  - बिना रिक्त स्थान वाले असमान चिह्नों को स्पर्श करते हुए अँगुलियों को ऊपर से नीचे लाना।
  - बिना रिक्त स्थान वाले एक समान चिह्नों को स्पर्श करते हुए अँगुलियों को ऊपर से नीचे लाना।
  - रिक्त स्थान वाले एक समान चिह्नों को स्पर्श करते हुए अँगुलियों को ऊपर से नीचे लाना।
  - रिक्त स्थान वाले असमान चिह्नों को स्पर्श करते हुए अँगुलियों को ऊपर से नीचे लाना।

उपरोक्त सूची से यह स्पष्ट है कि ब्रेल-पूर्व गतिविधियाँ जैसे कि फीते बाँधना, कागज़ को तोड़-मरोड़कर गेंद बनाना, गुब्बारे फोड़ना, चिकनी मिट्टी से आकृतियाँ बनाना इत्यादि, लघु माँसपेशीय कुशलताओं के विकास एवं संवर्द्धन की लक्ष्य पूर्ति में सहायक हैं और यह वर्तमान आ.बा.शि. कार्यक्रम का भी एक अत्यधिक महत्वपूर्ण अंग हैं।

भाषायी आवश्यकताएँ

शाला पूर्व के प्रत्येक बाल विद्यार्थी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह 'माफ़ कीजिए, धन्यवाद, कृपया, आपका स्वागत है, मदद कीजिए' इत्यादि शब्दावली का उचित प्रयोग सीखे, और 'कूदो, बैठो, खड़े हो जाओ, भागो, ताली बजाओ, रूको, झुको' जैसे निर्देशों का पालन करे, और 'गाय, बिल्ली, कुत्ता, खरगोश, हाथी, चूहा,' जैसे जानवरों एवं शरीर के अंगों जैसे कि 'आँख, कान, नाक, दाँत, पैर, हाथ' इत्यादि को भली-भाँति पहचाने।

आइए, इनमें से कुछ शब्दों के लिए प्रयोग होने वाले संकेतों को जानें और आ.बा.शि. केंद्र में इनके उपयोग की संभावना की पड़ताल करें। वेबसाइट

© NCERT not to be republished

टॉकिंग हैंड्स पर उपलब्ध वीडियो के आधार पर कुछ सामान्य शब्दों के संकेतों का वर्णन नीचे दिया गया है।

कृपया— इसका संकेत करने के लिए दाएँ हाथ की पाँचों अँगुलियों को 'आदाब' की मुद्रा में जोड़कर, नाक के ऊपरी सिरे को छूकर, हाथ को नीचे पेट की ओर लाइए और साथ ही सर को भी हल्का सा झुकाइए।

माफ़ कीजिए— चेहरे पर माफ़ी के भाव के साथ दाएँ हाथ की मुट्ठी बनाकर नाखूनों को छाती की ओर रखते हुए मुट्ठी को दिल के ऊपर छोटे-छोटे वृत्त (सर्कल) में घुमाएँ।

धन्यवाद— सीधे हाथ की अँगुलियों को जोड़कर, ठोड़ी को छुएँ और फिर हाथ को शरीर से दूर ले जाते हुए पेट के सामने रखे हुए हाथ की हथेली पर रखें।

कूदा— सीधे हाथ की पहली दो अँगुलियों से अंग्रेज़ी के 'v' अक्षर का चिह्न बनाएँ और छाती के सामने स्थिर दूसरे हाथ की आकाश की ओर खुली हथेली पर इसे उल्टा यानी कि 'ʌ' कर के कुदाएँ।

बितली— दोनों हाथों की पहली दो अँगुलियों से 'v' बनाएँ और चेहरे पर नाक के नीचे मूँछों के स्थान पर रखकर बाहर की ओर ले जाएँ।

आँखे— सीधे हाथ की पहली अँगुली से चेहरे पर अपनी आँखों की ओर इशारा करें।

नाक— सीधे हाथ की पहली अँगुली से चेहरे पर अपनी नाक की ओर इशारा करें।

आ.बा.शि. में सांकेतिक भाषा और ब्रेल की शुरुआत के फ़ायदे

मुख्य शब्दों के संकेत चिह्नों व ब्रेल-पूर्व गतिविधियों का छोटे बच्चों से परिचय करवाने से केवल दिव्यांग बच्चों को ही फ़ायदा नहीं होता बल्कि इसका लाभ अन्य बच्चों को भी मिलता है। जैसे— नए शब्दों को सीखना, स्वयं की शब्दावली में वृद्धि करना तथा सही वर्तनी के साथ बेहतर संवाद आदि।

संकेत करते समय शरीर के अंगों के प्रयोग से सीखे जा रहे शब्द की छवि मन में बनती है, जिससे अर्थ की बेहतर समझ पैदा होती है। एक बार जब अर्थ स्पष्ट हो जाता है तो बच्चा दिन-प्रतिदिन के संप्रेषण में शब्द का प्रयोग करने लगता है जिससे आत्मविश्वास में बढ़ोत्तरी के साथ साथ बच्चे की शब्दावली का भी संवर्द्धन होता है। (ज़ुकरब्रॉड 2011)

ब्रेल-पूर्व क्रियाओं के अधिगम से, प्रत्येक बच्चे में समान रूप से हस्त गति कौशलों के सशक्तिकरण के साथ-साथ, स्पर्श बोध का भी संवर्द्धन होता है। बेहतर स्पर्श संवेदना, दिन-प्रतिदिन के जीवन की क्रियाओं में लाभदायक सिद्ध हो सकती है, जैसे कि सब्जियाँ खरीदना, भिन्न सतहों को छूकर पहचानना इत्यादि।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए समावेशी आ.बा.शि. केंद्र के लाभ अनगिनत हैं। यह औपचारिक व्ययवस्था में, आरंभिक सेवाओं का अति आवश्यक अवसर देता है, जिसमें इन्हें स्वतंत्र रूप से जीवन जीने के लिए तैयार होने के साथ-साथ सामाजिक समावेशन के लिए भी प्रोत्साहन मिलता है।

दोनों समूहों के बच्चों यानि कि विशेष आवश्यकता वाले और गैर निशक्तता वाले सभी बच्चों में आत्म-प्रतिष्ठा, आत्मविश्वास और सभी के साथ जुड़ाव की समझ विकसित होती है। शुरुआती वर्षों के मित्र संबंध न केवल लंबे समय तक बने रहते हैं, बल्कि उन्हें भुलाना भी कठिन होता है।

अनुभवों एवं शोध ने दर्शाया है कि शुरुआती वर्षों में, एक से अधिक भाषा सीखना, बाद के वर्षों की तुलना में अपेक्षाकृत सरल होता है (1989, मारिया मांटेसरी)। आ.बा.शि. कक्षा-कक्ष

© NCERT not to be republished

में समावेशी शिक्षणशास्त्रीय पद्धति का अभ्यास, भिन्नताओं की स्वीकृति, दूसरों की आवश्यकताओं एवं क्षमताओं के प्रति संवेदनशीलता इत्यादि मूल्यों के आत्मसातीकरण को बढ़ावा देता है जो कि समावेशी समाज की नींव रखने में सहायक है।

समावेशी बाल शिक्षा केंद्र का निर्माण

आदर्शवादी कल्पना में तो आ.बा.शि. केंद्र है जहाँ सभी बच्चों, जिसमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चे और समाज के लाभान्वित क्षेत्र से संबंध रखने वाले भी शामिल हैं, की आवश्यकताओं की समुचित देखभाल हो। यह एक ऐसा केंद्र है, जहाँ शिक्षक, सांकेतिक भाषा, ब्रेल लिपि, गत्यात्मक और परिचयात्मक दैनिक जीवन कुशलताओं, भाषा संबंधी कठिनताओं की पहचान की तकनीकों, आरंभिक सेवाएँ प्रदान करने और सहायक उपकरणों के प्रयोग में पारंगत होंगे। इस प्रकार का केंद्र, संरचनात्मक अथवा मनोवृत्तिक सहित समस्त प्रकार के अवरोधों से मुक्त होगा। इस तरह की परिकल्पना को हकीकत में बदलना थोड़ा मुश्किल तो है, पर योजनाबद्ध तरीके से किया जाये तो इस कल्पना को हकीकत में बदलना संभव होगा।

वर्तमान आ.बा.शि. केंद्रों को समावेशी आ.बा.शि. केंद्रों में बदलने में निम्न सुझाव लाभदायक हो सकते हैं—

- संरचनात्मक अवरोधों को दूर करना। यदि केंद्र का भवन पहले से ही बना हुआ है तो इस कार्य को रख-रखाव अथवा मरम्मत कार्य के दौरान किया जा सकता है। जहाँ नया भवन/ बनाना हो, वहाँ योजना बनाते समय ही, सीढ़ी रहित भवन, रैंप, ब्रेल पथ इत्यादि सहित अवरोध मुक्त भवन निर्माण पर ध्यान देना आवश्यक है। ढलान (रैंप), उभरे तख्त वाले रास्ते, पहियादार कुर्सी के आवागमन के लिए पर्याप्त चौड़ी जगह वाले रास्ते/बरामदें सुनिश्चित करने होंगे। योजना बनाते समय श्रवण सूचना संकेतकों, निशक्तता सहायक शौचालयों, बिजली के स्विच बोर्ड की सहज पहुँच, सुगम्य पानी के नलों इत्यादि पर भी ध्यान देने की ज़रूरत है।
- कक्षा-कक्ष में छोटी अलमारियों या सामग्री रखने के लिए उचित जगह होनी चाहिए जिन पर ब्रेल/ बड़े छापे के अक्षरों/चित्र इत्यादि सूचना संकेतक लगाये जा सकें।
- कक्षा-कक्षों में अधिकतर चार्ट एवं सूचनापट्टों पर रंग-बिरंगे चित्र एवं पठन सामग्री लगायी जा सकती है। इसमें स्पर्श संवेदना वाले और प्रासंगिक संकेत सूचनात्मक जानकारी भी प्रदर्शित की जा सकती है।
- वर्णमाला को ब्रेल और अँगुली वर्णमाला सहित प्रदर्शित करने की ओर प्रयास किया जाना चाहिए। वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर के साथ उससे संबंधित एक चित्र, अँगुली संकेत और उसका ब्रेल बिंदु उभार दर्शाता चित्र होना चाहिए।
- प्रत्येक योजनाबद्ध गतिविधि में संकेत भाषा और ब्रेल लिपि को भी सम्मिलित करने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, शिक्षक रंग भरने वाली कार्य पत्रिका में आकृतियों की सीमा-रेखा को दाँतदार पहिए (Spur Wheel), धागे अथवा तीलियों की सहायता से उभार कर दृष्टिबाधित बच्चों को दे सकते हैं।
- सभी बच्चों, जिनमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चे भी शामिल हैं, की प्रत्येक गतिविधि में भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए, उचित

© NCERT not to be republished

अवसर निर्माण के तौर-तरीकों की खोजबीन की जानी चाहिए। श्रवणबाधित बच्चों को संकेतों/इशारों/हावभाव की सहायता से कविता पाठ में शामिल किया जा सकता है।

- जब गैर-निशक्तता वाले बच्चे कागज़ पर बिंदुओं को पेंसिल से जोड़ने का अभ्यास कर रहे हों, तब दृष्टि-विकार वाले बच्चों को ब्रेल स्लेट से परिचित कराने और श्रवणबाधित बच्चों को अँगुली वर्णमाला की जानकारी देने का प्रयत्न किया जा सकता है।

आ.बा.शि. केंद्र में प्रयोग किये जाने वाली समस्त सामग्री एवं गतिविधि को सुगम्य बनाया जा सकता है, यदि अधिगम के लिए सार्वभौमिक संरचना (यूनिवर्सल डिज़ाइन फॉर लर्निंग) को अपनाया और अभ्यास में लाया जाए। आवश्यक अनुकूलन और बदलाव शायद अभ्यास पुस्तिकाओं पर स्पर्श पहचान के लिए चिपकायी जाने वाली बिंदी/स्टीकर की तरह बेहद सरल है। यह आ.बा.शि. केंद्र में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षक-अधिगम सामग्रियों का आवश्यक भाग बन सकते हैं। ब्रेल के आरंभिक पठन अभ्यास में पुस्तकें और प्राथमिक शब्दावली को संकेत भाषा में दर्शाती लघु फिल्में शामिल होनी चाहिए।

निष्कर्ष

दृष्टिबाधित बच्चे जिन्हें स्पर्श संवेदनाओं में भिन्नता की पहचान का प्रशिक्षण शुरुआती वर्षों में मिला हो, वह अपने उन साथियों से हमेशा आगे ही रहते है जिन्हें स्पर्श संवेदना प्रशिक्षण का अवसर पूर्व-प्राथमिक विद्यालय के बाद मिला हो। इसी तरह से सांकेतिक भाषा में आ.बा.शि. केंद्र में आरंभिक अवसर पाने वाले श्रवणबाधित बच्चे, अपने हमउम्र अन्य श्रवणबाधित अवसर न मिल पाने वाले बच्चों से हमेशा आगे रहते हैं। आ.बा.शि. केंद्र जिसमें समावेशी शिक्षणशास्त्रीय व्यवहारों का अभ्यास होता है, वह समावेशी पद्धतियों को विद्यालयी शिक्षा के प्राथमिक, उच्च प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर अनुकूलन के लिए ऐसी ठोस नींव रखते हैं, जिसे विद्यालय के बाद उच्च शिक्षा में भी जारी रखा जा सकता है। इच्छित व्यवहारों और अधिगम की ओर जल्द परिचय एवं हस्तक्षेप से न केवल व्यक्तिगत रूप से विशेष आवश्यकता वाले बच्चे ही लाभान्वित होते हैं, बल्कि यह समावेशी समुदायों और समाज के निर्माण की ओर भी ले जाता है।

हर नए विचार की भाँति इस विचार को भी स्वीकृति और कार्यशैली में उचित समायोजन से पहले अपने हिस्से के अवरोधों और बाधाओं का सामना करना होगा। आ.बा.शि. की वर्तमान व्यवस्था में समावेशी शिक्षण व्यवहारों का समायोजन बहुत मुश्किल कार्य नहीं है, आवश्यकता है तो केवल ज़रूरतों के अनुसार सभी तरह के संसाधनों की उपलब्धि सुनिश्चित कराने वाली योजना निर्माण में समय एवं श्रम के निवेश की।

© NCERT not to be republished

संदर्भ

ग्वाइन मोटर एक्टिविटीज़ चेकलिस्ट टू एनकरेज द डेवलपमेंट ऑफ़ प्री-ब्रेल स्किल्स. http:// www.pathstoliteracy.org/resources/motor-activities-checklist-encourage-development-pre-braille-skills पर 13.03.2018 को देखा गया।

ज़ुकरब्रॉड, नैन्सी. पैरेन्ट्स मैगज़ीन. http://www.parents.com/toddlers-preschoolers/development/language/kids-learning-sign-language/ पर 13.03.2018 को देखा गया।

द टेक्सास स्कूल फ़ॉर द ब्लाइंड एंड विज़ुअली इम्पेयर्ड. http://www.tsbvi.edu/early-childhool/1927-motor-activities-to-encourage-pre-braille-skills पर 13.03.2018 को देखा गया।

द मेनगेल्ड बेसिक ब्रेल प्रोग्राम, फ़्रॉम टेक्चुअल परसेपशन टू लर्निंग द यूनिफ़ाइड इंग्लिश ब्रेल कोड.

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय. 2013. मिनिस्ट्री *नेशनल अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन (ई.सी.सी.ई. पॉलिसी)* ऑफ़ वूमन एंड चाइल्ड डेवलपमेंट. http://icds-wcd.nic.in/schemes/ECCE/ecce_01102013 eng.pdf पर 13.03.2018 को देखा गया।

मॉन्टेसरी, मारिया. 1989. *फॉर्मेशन ऑफ़ मैन*. मॉन्टेसरी पीयरसन पब्लिशिंग कम्पनी, नीदरलैंड.

सोनी, रोमिला. 2015. थीम बेस्ड अर्ली चाइल्डहुड प्रोग्राम. http://www.ncert.nic.in/departments/nie/dee/publication/pdf/deethemebased.pdf को देखा गया।

साइन लैंग्वेज वीडियोज. http://www.talkinghands.co.in/Defeult 13.03.2018 को देखा गया.

2013. प्रमोटिंग इंक्लूसिव टीचर एजूकेशन, एडवोकेसी गाइड मेथडोलॉजी. http://unesdoc.unesco.org/images/0022/002210/221037e.pdf पर 13.03.2018 को यूनेस्को की वेबसाइट पर देखा गया।

© NCERT not to be republished